स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन

राजेश कुमार यादव

स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित एवं उद्घाटित करते हुए कहा है कि भारत की निर्धनता का एक महत्त्वपूर्ण कारण अशिक्षा है। स्वामी जी तत्कालीन शिक्षा–प्रणाली से विशेष दुःखी थे। उनका मन्तव्य था कि उस समय की शिक्षा मनुष्य में कोई गुण उत्पन्न नहीं करती। वह मनुष्य बनाने वाली शिक्षा है ही नहीं। उसमें कोई तत्व की बात दी ही नहीं जाती। उस शिक्षा को स्वामी जी ने निषेधात्मक शिक्षा की संज्ञा दी है। अंग्रेजी शिक्षा–प्रणाली में निषेधों पर विशेष बल दिया जाता था। उसमें हाथ–पैर से काम न करने पर, मातृ भाषा का प्रयोग न करने पर, मौलिकता प्रदर्शित न करने पर बल था। फलतः उसमें मनुष्यत्व के गुणों का विकास नहीं करती है।